असली आज़ादी का दिन तो जब मनाये!

==========

असली आज़ादी का दिन तो जब मनाये!

जब देह की मिट्टी से खुद को छुड़ा पाये

पाँच-विकारों की आग से खुद को बचा पाये

आत्मायें चीख -चीख कर रही पुकारे..हे प्रभु आओ

ईश्वर-अल्लाह-वाहेगुरु हमें दुखो से छुड़ाओ

आत्मा की पुकार सुन प्रभु अपना धाम छोड़..
धरती पर है अब आये

पतित हुई सृष्टि को बनाने पावन ,सुख शांति का वर्सा देने

अज्ञानता की नींद में है मनुष्य सोये...
विकारों से खुद को लपेटे

चारों और है काम-महाशत्रु का आंतक छाया

द्रोपदी का चीर-हरण का डर का कौतुक समाया

क्रोध की अग्नि से घर -देश-विदेश सब जल रहे

भाई -भाई के नाम से खून की नदिया जा रही बहे

लोभ -प्रलोभ के जाल में फंसा रही कपटी माया

सन्तुष्टता नही चाहे हो करोड़ो -अरबो हो धन कमाया

मोह का कीड़ा बुन रहा अपना मीठा-प्यार का जाल

सम्बन्ध -संपर्क की जंजीड़ॉ में फंस.. लगने लगा सब जंजाल

अपने को भूल आत्मा देह में है ऐसी फंसी

खो चुकी है अपनी सारी सेहत और ख़ुशी

अज्ञानता की नींद में है बेहोश पड़ी
नही उसको अनुभव होती सुख-शांति प्रेम की अनुभूति कहीं

मकड़ी की तरह अपने बुने जाल से अब कैसे निकले!

देह के इस पिंजड़े को तोड़ कैसे उड़े??

आत्मा बन जब परमात्मा से सर्व सम्बन्ध जोड़े

तब तो आज़ाद हो अपने मुक्तिधाम घर को दौड़े

ॐ शांति!!!

मेरा बाबा!!!